International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 3, May-June, 2025, pp: 437-439 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

'गोदान' उपन्यास में किसान की स्थिति का यथार्थ बोध

उमाकान्त
हिंदी विभाग, राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़, झारखण्ड

डॉ. दुर्गेश श्रीवास्तव
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़, झारखण्ड

Date of Submission: 15-05-2025 Date of Acceptance: 31-05-2025

प्रसिद्ध हिंदी लेखक मुंशी प्रेमचंद की कृतियाँ भारतीय साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं, और उनके उपन्यासों ने भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है। अपने उपन्यासों के उद्देश्य को रेखांकित करते हुए प्रेमचंद लिखते हैं,"हम साहित्य को मनोरंजन और विलासिता की वस्तु नहीं समझते। हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें चित्रण की स्वाधीनता का भाव हो, सौंदर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाई का प्रकाश हो, जो हममें गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करे, सुलावे नहीं।"[1]इनकी रचनाओं में*गोदान*विशेष रूप से किसान वर्ग की पीड़ा और संघर्ष को प्रमुख रूप से चित्रित करता है।*गोदान* (1936) मुंशी प्रेमचंद का अंतिम उपन्यास है, जो भारतीय किसान की कठिनाइयों, उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति और संघर्षों को लेकर गहरी चिंता और विचारशीलता प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास में किसान की आर्थिक, सामाजिक, और मानसिक स्थिति का यथार्थपूर्ण चित्रण किया गया है।किसान भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, लेकिन उसे समाज और सरकार के विभिन्न रूपों से लगातार संघर्ष करना पड़ता है।*गोदान*उपन्यास में प्रेमचंद ने किसान की जीवन-स्थितियों और उसके संघर्षों को यथार्थवादी दृष्टिकोण से चित्रित किया है। गोदान के संदर्भ में डॉ रामविलास शर्मा ने लिखा है कि "गोदान किसान जीवन का महाकाव्य है। उसमें जीवन का एक पहलू नहीं दिखाया गया है, वह एक विशाल नदी की तरह है। इसमें मूल धारा के साथ आसपास के नालों का पानी, जड़ से उखड़े हुए पुराने खोखले पेड़ और खेतों का घासपात भी बहता हुआ दिखाई देता है।"[2]

*गोदान*उपन्यास में प्रेमचंद ने भारतीय किसानों की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं को सामने रखा है। इस उपन्यास के पात्र न केवल व्यक्तिगत संघर्षों का सामना कर रहे हैं, बल्कि वे सामूहिक रूप से एक असमान और उत्पीड़क समाज से जूझ रहे हैं। प्रेमचंद का उद्देश्य किसानों की स्थिति को समाज के विभिन्न आयामों में उभारना था, ताकि समाज इस वर्ग की वास्तविक स्थिति को समझ सके।इस उपन्यास का केंद्रीय पात्र*होरी*है, जो एक गरीब और संघर्षशील किसान है। होरी के माध्यम से प्रेमचंद ने यह दर्शाया है कि भारतीय किसान के लिए सुख और समृद्धि सिर्फ एक सपना बनकर रह जाता है। यद्यपि होरी मेहनत करता है, फिर भी वह पूरी तरह से आर्थिक रूप से असहाय रहता है।

गोदान में प्रेमचंद ने किसान की आर्थिक स्थिति को केंद्रित किया है। भारतीय किसान की कठिनाई केवल कृषि उत्पादन और उसकी लागत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उसकी सामाजिक स्थिति और आर्थिक तंगी से भी जुड़ी हुई है।होरी जैसे किसान के लिए कृषि जीवन का सबसे कठिन पहलू यह है कि वह प्राकृतिक संसाधनों, जैसे वर्षा और मौसम के बदलावों के नियंत्रण से बाहर होता है। इस संकट का सबसे बड़ा कारण अंग्रेजी शासन के समय से चली आ रही जमींदारी व्यवस्था और कृषक वर्ग की उपेक्षा थी। होरी की स्थिति इस बात को स्पष्ट करती है कि किसान अपनी मेहनत से खेती करता है, लेकिन फिर भी उसकी स्थिति में कोई

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 3, May-June, 2025, pp: 437-439 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

सुधार नहीं होता।डॉ रामविलास शर्मा अपनी पुस्तक 'प्रेमचंद और उनका युग' में लिखते हैं,"गोदान में किसानों के शोषण का रूप ही दूसरा है। यहां सीधे-सीधे राय साहब के कारिंदे होरी का घर लूटने नहीं पहुंचते, लेकिन उसका घर लुट जरूर जाता है। यहां अंग्रेजी राज के कचहरी-कानून सीधे-सीधे उसकी जमीन छीनने नहीं पहुंचते लेकिन जमीन छीन जरूर जाती है। होरी के विरोधी बड़े सतर्क है। वह ऐसा काम करने में झिझकते हैं जिससे होरी दस-पाँच को इकट्ठा करके उनका मुकाबला करने को तैयार हो जाए। वह उनके चंगुल में फंसकर तिल-तिल कर मरता है लेकिन समझ नहीं पाता कि यह सब क्यों हो रहा है। वह तकदीर को दोष देकर रह जाता है, समझता है; यह सब भाग्य का खेल है, मनुष्य का इसमें कोई बस नहीं।"[3] होरी को अपनी ज़मीन और फसल की देखभाल करने के लिए ऋण की आवश्यकता थी, जिसे वह बड़ी मुश्किल से उधार लेता है। प्रेमचंद ने यह दिखाया कि किस प्रकार साहूकारों द्वारा दिए गए ऋण के चक्कर में किसान को और भी ज्यादा कर्ज में डुबो दिया जाता है। होरी पर बकाया कर्ज चुकाने का दबाव बढ़ता है, और वह अपनी जमीन बेचने के लिए मजबूर हो जाता है, लेकिन फिर भी वह आर्थिक संकट से बाहर नहीं निकल पाता।

*गोदान*उपन्यास में किसान की सामाजिक स्थिति को भी बारीकी से चित्रित किया गया है। भारतीय समाज में जातिवाद और असमानता की दीवारें हैं, जो किसानों की स्थिति को और भी कठिन बना देती हैं।होरी जैसे किसानों को उनकी जाति के कारण समाज में कमतर समझा जाता है। वे उच्च जातियों के दबाव में होते हैं, जो उन्हें हर स्तर पर अपमानित करते हैं। गोदान में प्रेमचंद ने इस सामाजिक असमानता को उजागर करते हुए यह दर्शाया है कि किसान न केवल आर्थिक रूप से पीड़ित है, बल्कि वह सामाजिक रूप से भी प्रताड़ित है।होरी अपनी स्थिति के लिए भाग्य को दोषी मानता है। वह अपने बेटे गोबर को समझाते हुए कहता है,"छोटे-बड़े भगवान के घर से बनकर आते हैं। संपत्ति बड़ी तपस्या से मिलती है; उन्होंने पूर्व जन्म में जैसे कर्म किए हैं, उनका आनंद भोग रहे हैं। हमने कुछ नहीं सोचा तो भोगे क्या? किंतु गोबर उसकी बात से सहमत नहीं है, वह प्रगतिशील चेतना का प्रतीक है और इस बात को जानता है कि भगवान तो सबको बराबर बनाते हैं। यहां जिसके हाथ में लाठी है, वह गरीबों को कुचलकर बड़ा आदमी बन जाता है।"[4] प्रेमचंद ने*गोदान*में यह दिखाया है कि किस प्रकार गाँव में जमींदार और गाँव के उच्च वर्ग के लोग किसानों का शोषण करते हैं। वे उन्हें ना सिर्फ उनकी मेहनत का सही मूल्य नहीं देते, बल्कि उनका सामाजिक सम्मान भी छीनते हैं। इन सभी स्थितियों से यह साफ़ होता है कि किसान न केवल अपनी आर्थिक तंगी से जूझ रहा है, बल्कि उसे समाज में नीच समझे जाने के कारण मानसिक कष्ट भी झेलने पड़ते हैं।

*गोदान*में किसान की मानसिक स्थिति का भी गहरा चित्रण किया गया है। होरी के जीवन में शारीरिक श्रम और मानसिक दबाव दोनों ही एक साथ मौजूद हैं।होरी अपनी गरीबी के बावजूद अपने बेटे*गोबर*को उच्च शिक्षा देने की इच्छा रखता है, ताकि वह जीवन में कुछ बेहतर कर सके। यह उसके मानसिक संघर्ष को दर्शाता है। वह यह मानता है कि अगर उसका बेटा डॉक्टर या इंजीनियर बन सके तो उसकी स्थिति में सुधार हो सकता है। लेकिन जीवन की कठोर सच्चाई उसे लगातार निराश करती है।होरी का जीवन लगातार शारीरिक श्रम से भरा हुआ है। वह खेतों में काम करता है, लेकिन फिर भी उसे आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता है। वह सर्दी-गर्मी, वर्षा-सूखा और अत्यधिक श्रम के बावजूद अपनी स्थिति में कोई सुधार नहीं देख पाता। इस संघर्ष का चित्रण प्रेमचंद ने बहुत ही बारीकी से किया है, जो किसान की असहमति और असंतोष को उजागर करता है।

*गोदान*उपन्यास में प्रेमचंद ने किसान की स्थिति का यथार्थ बोध बहुत ही प्रभावी तरीके से किया है। यह उपन्यास न केवल एक व्यक्तिगत कथा है, बल्कि यह भारतीय ग्रामीण समाज की वास्तविकता और उसकी समस्याओं का एक दस्तावेज़ भी है। प्रेमचंद ने*गोदान*में यथार्थवाद का उपयोग करते हुए यह दिखाया है कि किस प्रकार एक किसान के जीवन में संघर्ष और पीड़ा की कोई सीमा नहीं होती।

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 3, May-June, 2025, pp: 437-439 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

- **आर्थिक संकट**: होरी की गरीबी, उसका कर्ज और उसकी असमर्थता यह सब यह दर्शाता है कि भारतीय किसान की स्थिति केवल कृषि संकट से नहीं, बल्कि एक सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था की कमजोरी से जुड़ी हुई है। इस संबंध में पुष्पपाल सिंह लिखते हैं, "गोदान का पूरा महावृत्त किसानों की इस महावृत्त का अनुपम आख्यान है। वस्तुतः किसान भू रक्षा प्रयत्न में अपना सर्वस्व न्योछावर कर देता है। आठ आने रोज सड़क का मजदूर बन जाता है।"[5]

- **समाज का शोषण**: उच्च जाति के लोग और जमींदार किसानों का शोषण करते हैं। किसानों की स्थिति में कोई सुधार नहीं होता, और उनकी मेहनत का सही मूल्य कभी नहीं मिलता। किसान के शोषण की वास्तविकता को दर्शाने के लिए प्रेमचंद होरी के मुख से कहलवाते हैं, "हमीं को खेती से क्या मिलता है जो दस रूपयेमहीनेकानौकरहैवहभीहमसेअच्छाखाता पहनताहै।लेकिनखेतोंको छोड़ा नहीं जाता मरजाद भी तो पालना ही पड़ता है। खेती में जो मरजाद है, वह नौकरी में तो नहीं है।"[6] प्रेमचंद होरी के लिए कहते हैं, "जीवन के संघर्ष में उसे सदैव हार हुई, पर उसने हिम्मत नहीं हारी। प्रत्येक हार जैसे उसे लड़ने की शक्ति दे देती थी। मगर अब वह अंतिम दशा को पहुंच गया था जब उसमें आत्मविश्वास भी न रहा था।"[7]

- **मानसिक संघर्ष**: किसान अपने परिवार और समाज में सम्मान पाने के लिए संघर्ष करता है, लेकिन उसे किसी भी प्रकार का न्याय नहीं मिलता। उसका मानसिक और शारीरिक संघर्ष उसकी जीवन यात्रा का अभिन्न हिस्सा बन जाता है।रामविलास शर्मा इस संदर्भ में कहते हैं,"गोदान की गति धीमी है, होरी के जीवन की गति की तरह। यहां सैलाब का वेग नहीं है, लहरों के थपेड़े नहीं है। यहां ऊपर से शांत दिखने वाली नदी भँवरे ही जो भीतर-ही-भीतर मनुष्य को डुबोकर तलहटी से लगा देती है और दूसरों को वह तभी दिखाई देता है जब उसकी लाश ऊपर आई हुई बहने लगी।"[8]

*गोदान*उपन्यास में प्रेमचंद ने भारतीय किसान की वास्तविक स्थिति को यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास के माध्यम से प्रेमचंद ने न केवल किसानों की आर्थिक तंगहाली और सामाजिक असमानता को उजागर किया है, बल्कि उनकी मानसिक और शारीरिक पीड़ा को भी दर्शाया है। होरी का जीवन एक सशक्त उदाहरण है कि कैसे भारतीय किसान लगातार अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करता है, और कैसे समाज और शासन की उपेक्षा के कारण उसकी स्थिति में कोई सुधार नहीं होता।*गोदान*में प्रेमचंद ने जिस प्रकार से किसानों की पीड़ा और संघर्ष को उकेरा है, वह आज भी हमारे समाज में प्रासंगिक है। उनका यह उपन्यास न केवल उस समय की स्थिति का चित्रण करता है, बल्कि आज भी भारतीय किसान के यथार्थ को समझने और उसके लिए एक बेहतर समाज बनाने की दिशा में प्रेरणा देता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. https://www.hindijournal.com
2. शर्मा, डॉ रामविलास,प्रेमचंद और उनका युग, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1993, पृष्ठ 45
3. www.ijfmr.com
4. https://www.hindijournal.com
5. सिंह, पुष्पपाल, सामाजिक सरोकारों के अग्रणी लेखक, गगनांचल पत्रिका, सितंबर अक्टूबर 2014, पृष्ठ 6
6. सरिता, गोदान उपन्यास में कृषक जीवन की करुण गाथा, शब्द ब्रह्म भारतीय भाषाओं की अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका, 17 अप्रैल 2017, पृष्ठ 39-40
7. प्रेमचंद, गोदान, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर, मुंबई, संस्करण 1936, पृष्ठ 357
8. www.ijfmr.com